अध्याय
04

विचारक, विश्वास और इमारतें
सांस्कृतिक विकास
(ईसा पूर्व 600 से ईसा संवत् 600 तक)

© JCERT not to be republished

सांस्कृतिक विकास

(लगभग 600 ईसा पूर्व से ईसा संवत् 600 तक)

छठी शताब्दी ईसा पूर्व का काल ना केवल भारतीय इतिहास में बल्कि संपूर्ण विश्व इतिहास में धार्मिक उथल-पुथल का काल था इस काल में ईरान में जरथुस्त्र, चीन में खुंगत्सी, यूनान में सुकरात, प्लेटो और अरस्तू जैसे महान विचारकों का जन्म हुआ। इस काल में उत्तर भारत के मध्य गंगा घाटी के क्षेत्र में अनेक मतों एवं दर्शनों का उद्भव हुआ जिन्होंने अंत में एक महान बौद्धिक एवं धार्मिक आंदोलन का रूप धारण कर लिया धार्मिक एवं बौद्धिक आंदोलन को अधिक व्यापक एवं लोकप्रिय बनाने का वास्तविक श्रेय जैन धर्म तथा बौद्ध धर्म को है।

जैन धर्म एवं बौद्ध धर्म के उदय के कारण

वैदिक धर्म की जटिलता

- खर्चीले यज्ञ, बलि, व्यर्थ के रीति-रिवाजों एवं आडंबर को अत्यधिक महत्व दिया जाने लगा
- कुछ यज्ञ कई-कई दिनों, महीनों एवं वर्षों तक चलते रहते थे
- यज्ञ संपन्न करवाने के लिए ब्राह्मणों को दक्षिणा दी जाती थी
- जटिल एवं बोझिल धर्म, जन सामान्य की पहुंच से दूर होने लगे जन सामान्य में इसके विरुद्ध भावनाएं उत्पन्न होने लगी।

जाति प्रथा की जटिलता

ऋग्वैदिक काल में आर्यों ने व्यवसाय के आधार पर वर्ण व्यवस्था की स्थापना की थी किंतु उत्तर वैदिक काल में वर्ण व्यवस्था जन्म पर आधारित जाति व्यवस्था में बदल गई।

छठी शताब्दी ई. पू. तक इस प्रथा ने कठोर रूप धारण कर लिया पहले तीन वर्णों ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य को जनेऊ धारण करने और वेद पढ़ने का अधिकार था किंतु चौथे वर्ण शूद्र को इससे वंचित रखा गया

इस प्रकार समाज के एक विशाल भाग में वैदिक परंपरा के विरुद्ध असंतोष उत्पन्न होने लगा।

वैदिक ग्रंथों की कठिन भाषा

संपूर्ण वैदिक साहित्य की रचना कठिन संस्कृत भाषा में की गई थी क्योंकि संस्कृत पवित्र भाषा समझा जाता था

छठी शताब्दी ई. पू. के काल तक यह भाषा जनसामान्य के भाषा के स्थान पर केवल विद्वानों की भाषा बन गई

पाली तथा प्राकृत जन सामान्य की भाषाएं बनती जा रही थी

धर्म ग्रंथ भी संस्कृत भाषा में होने के कारण जन सामान्य की समझ से बाहर होते जा रहे थे

क्षत्रिय वर्ग की प्रतिक्रिया

ब्राह्मण वर्ग के दिन प्रतिदिन बढ़ते हुए प्रभाव के विरुद्ध क्षत्रिय वर्ग की प्रतिक्रिया जैन धर्म एवं बौद्ध धर्म के उदय का एक महत्वपूर्ण कारण बने

क्षत्रिय शासक के रूप में कार्य करते थे ब्राह्मणों के धर्म संबंधी प्रभुत्व के विरुद्ध थे

क्षत्रियों द्वारा ब्राह्मणों की धार्मिक सर्वोच्चता का विरोध किया जाना नवीन धर्मों के उदय का महत्वपूर्ण कारण बना

© JCERT not to be republished

नवीन कृषि अर्थव्यवस्था का विस्तार

600 ईसा पूर्व के आसपास जब लोहे का प्रयोग होने लगा तो लोहे के औजारों से जंगलों की कटाई की जाने लगी और बड़े-बड़े बस्तियां अस्तित्व में आने लगे

जंगलों के सफाई से कृषि योग्य भूमि का विस्तार होने लगा खेतों की जुताई तथा अन्य कृषि कार्यों के लिए बैलों की मांग में वृद्धि होने लगी

वैदिक कर्मकांड के अनुसार यज्ञों में बलि देने के लिए पशुओं का अंधाधुंध वध किए जाने के कारण पशु धन की हानि होने लगी

नवीन कृषि अर्थव्यवस्था के विकास एवं विस्तार के लिए पशु वध पर रोक लगाया जाना अत्यंत आवश्यक था अतः जन सामान्य की अभिरुचि वैदिक कर्मकांड के विरुद्ध होने लगी

वैश्य वर्ग के महत्व में वृद्धि

लोहे के उपकरणों के प्रयोग के परिणाम स्वरूप कृषि भूमि का विस्तार हुआ

उत्पादन में वृद्धि होने के कारण व्यापार वाणिज्य को प्रोत्साहन मिला समाज में वैश्य वर्ग का महत्व बढ़ने लगा

अतः वैश्य वर्ग ऐसे धर्म की आकांक्षा करने लगे जिसके अंतर्गत उनकी सामाजिक स्थिति ऊंची हो सके

नवीन विचारों एवं विचारकों का उदय

समाज में ब्राह्मणों की अनुचित प्रधानता तथा उनके द्वारा प्रचारित कर्मकांड के विरोध में छठी शताब्दी ई. पू. के काल में नवीन विचारों एवं विचारकों का जन्म हुआ

अनेक विचारक जिन्हें श्रमण कहा जाता था स्थान- स्थान पर घूम कर अपनी विचारधाराओं के विषय में अन्य लोगों से तर्क-वितर्क करने लगे यह विचारक एवं दार्शनिक समाज के सभी वर्गों से संबंधित थे

नवीन विचारों एवं विचारकों ने जैन धर्म एवं बौद्ध धर्म के उदय की आधार भूमि का निर्माण करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया

© JCERT not to be republished

जैन धर्म

जैन शब्द संस्कृत के जिन शब्द से बना है जिसका अर्थ है विजेता अर्थात वह व्यक्ति जिसने अपनी इंद्रियों पर विजय प्राप्त कर ली हो।

जैन मुनि और सन्यासी निर्ग्रंथ के नाम से जाने जाते हैं निर्ग्रंथ का अर्थ होता है बंधन मुक्त अर्थात वह महान आत्माएं जो सभी सांसारिक बंधनों से मुक्त हैं।

जैन धर्म के आचार्य तीर्थंकर कहलाते हैं तीर्थंकर का अर्थ है संसार रूपी सागर से पार उतरने वाला

जैन मान्यताओं के अनुसार 24 तीर्थंकर हुए हैं

महावीर स्वामी जैन धर्म के संस्थापक नहीं बल्कि 24वें एवं अंतिम तीर्थंकर थे

स्वामी ऋषभदेव जैन धर्म के संस्थापक एवं प्रथम तीर्थंकर थे

23वें तीर्थंकर स्वामी पार्श्वनाथ काशी के राजा अश्व सेन के पुत्र थे।

महावीर स्वामी की जीवनी

जन्म - 540 ई.पू.

स्थान - वैशाली (बिहार) के पास कुण्डग्राम (बिहार के आधुनिक जिले मुजफ्फरपुर) में हुआ था

प्रारंभिक नाम - वर्धमान

पिता - सिद्धार्थ (ज्ञातक कुल के क्षत्रिय गण के मुखिया थे)।

माता - त्रिशला (वैशाली के सुप्रसिद्ध लिच्छवी शासक चेटक की बहन थी)

पत्नी - यशोदा

पुत्री - अयोज्जा (प्रियदर्शना)

गृह त्याग - 30 वर्ष की आयु में महावीर स्वामी घर छोड़ कर संन्यासी बन गए

ज्ञान प्राप्ति - 12 वर्ष की कठोर तपस्या के बाद महावीर स्वामी को कैवल्य अर्थात् परम ज्ञान जम्भीका ग्राम में ऋजुपालिका नदी के तट पर साल वृक्ष के नीचे प्राप्त हुई।

ज्ञान प्राप्ति के बाद उन्हें सुख-दुख के बंधनों से पूर्ण मुक्ति मिल गए और वे अर्हत (पूज्य), केवलिन (सर्वज्ञ) महावीर (सर्वोच्च योद्धा), निर्ग्रंथ (बंधन रहित) और जिन (विजय) के नाम से प्रसिद्ध हुए।

महावीर स्वामी ने अपने जीवन काल के शेष 30 वर्ष कौशल, मगध,मिथिला, चंपा आदि प्रदेशों में घूम- घूम कर अपने धर्म का प्रचार करने में बताएं।

468 ई. पू.72वर्ष की आयु में राजगीर के समीप पावापुरी में महावीर स्वामी को निर्वाण (मृत्यु) की प्राप्ती हुई।

© JCERT not to be republished

JEPC Reference Book for Free Distribution : 2022-23

महावीर स्वामी की शिक्षाएं

महाव्रत - महावीर स्वामी ने पांच मुख्य महाव्रत पर जोर दिया

सत्य – हमेशा सत्य बोलना

अहिंसा –हिंसा न करना

अस्तेय - कभी चोरी नहीं करना

अपरिग्रह– संपत्ति का संग्रह न करना

ब्रह्मचर्य– इंद्रियों को वश में रखना

जैन धर्म के सिद्धांत– ज्ञान प्राप्ति के बाद महावीर स्वामी ने जो विचार प्रकट किए वे ही जैन धर्म के सिद्धांत बन गए जो निम्न हैं –

ईश्वर में अविश्वास– महावीर स्वामी ईश्वर को नहीं मानते थे। उनके अनुसार ईश्वर न ही इस संसार का रचयिता है और न ही नियंत्रक

आत्मा का अस्तित्व– महावीर स्वामी प्रत्येक जीव पेड़-पौधे सभी में आत्मा का अस्तित्व मानते थे।

कर्मफल एवं पुनर्जन्म –महावीर स्वामी ने पुनर्जन्म के सिद्धांत को माना है कर्म-फल ही जन्म मृत्यु का कारण है। पुनर्जन्म का सिद्धांत मनुष्य के कर्म पर आधारित है

मोक्ष अथवा निर्वाण– सांसारिक बंधन से मुक्ति को निर्वाण कहा गया है। कर्म-फल से मुक्ति पाकर ही व्यक्ति मोक्ष अथवा निर्माण की ओर आगे बढ़ सकता है

त्रिरत्न

सम्यक ज्ञान–सच्चा एवं पूर्ण ज्ञान का होना ही सम्यक ज्ञान है।

सम्यक दर्शन– सत्य में विश्वास एवं यथार्थ ज्ञान के प्रति श्रद्धा ही सम्यक दर्शन है।

सम्यक आचरण– सच्चा आचरण एवं सांसारिक विषयों से उत्पन्न सुख-दुख के प्रति समान भाव ही सम्यक आचरण है।

not to be republished © JCERT

जैन धर्म का प्रसार

महावीर स्वामी द्वारा निर्मित गणधर समूह के द्वारा जैन संघ ने जैन धर्म के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

महावीर स्वामी के निर्वाण के समय जैन धर्म के अनुयायियों की संख्या लगभग 14,000 थी।

जैन धर्म मगध, कौशल, विदेह एवं अंग राज्य में फैल गया था।

दक्षिण भारत में जैन धर्म के प्रसार का श्रेय भद्रबाहु को जाता है।

जैन धर्म के प्रसार के कारण

राजकीय संरक्षण – हर्यक वंश के शासक बिंबिसार, अजातशत्रु, उदयन, मौर्य सम्राट चंद्रगुप्त मौर्य, बिंदुसार एवं कलिंग राजा खारवेल जैन धर्म के अनुयाई थे, इस प्रकार राजकीय संरक्षण का होना जैन धर्म के प्रसार में सहायक हुआ।

बोलचाल की भाषा का प्रयोग– जैन धर्म के सिद्धांत साधारण बोलचाल के भाषा प्राकृत में लिखे गए इस से जनता आकर्षित हुई जैन मुनि साधारण भाषा में ही उपदेश देते थे।

सामाजिक समानता– महावीर स्वामी ने जाति व्यवस्था का घोर विरोध किया धर्म के द्वार सभी वर्गों एवं स्त्रियों के लिए खोल दिए,इस से जनसाधारण इस धर्म की ओर आकर्षित हुई।

जैन संगीति

प्रथम जैन संगीति 1.वर्ष 2.300 ई०पू०, **3.स्थान 4.**पाटलिपुत्र **5.अध्यक्ष 6.**स्थूलभद्र **7.मुख्य कार्य 8.**बारह अंगों का संकलन

द्वितीय जैन संगीति 1. वर्ष 2. 512 ई. **3.स्थान 4.**वल्लभी **5.अध्यक्ष 6.** देवर्धीगण (क्षमाश्रमण) **7.मुख्य कार्य 8.**कुल ग्यारह अंगों को लिपिबद्ध किया गया

जैन धर्म का विभाजन

महावीर स्वामी की 468 ई.पू.में मृत्यु के पश्चात लगभग 200 वर्षों बाद मगध में भीषण अकाल पड़ा, भद्रबाहु के नेतृत्व में कुछ जैन दक्षिण भारत चले गए और कुछ लोग स्थूलभद्र के नेतृत्व में मगध में ही रह गए।

श्वेतांबर– स्थूलभद्र के अनुयायियों ने श्वेत वस्त्र धारण करना आरंभ कर दिया कुछ उदार एवं सुधारवादी हो गए ये पार्श्वनाथ के अनुयाई थे यही श्वेतांबर कहलाए।

दिगंबर– भद्रबाहु के अनुयाई महावीर स्वामी के कट्टर समर्थक बने रहे, ये नग्न रहते थे, जैन धर्म के सिद्धांतों का सख्ती से पालन करते थे, यह लोग दिगंबर कहलाए।

© JCERT not to be republished

जैन साहित्य

जैन विद्वानों ने प्राकृत, संस्कृत और तमिल जैसे अनेक भाषाओं में महत्वपूर्ण साहित्य का सृजन किया प्रारंभिक जैन ग्रंथों की रचना प्राकृत भाषा में की गई।

प्राचीनतम जैन ग्रंथ पूर्व कहे जाते थे, चौदह पूर्व में महावीर द्वारा प्रचारित सिद्धांत संग्रहित है।

जैन साहित्य जिसे आगम कहा जाता है इसमें पूर्व के स्थान पर बारह अंग, बारह उपांग, दस प्रकीर्ण,छः छंद सूत्र, चार मूलसूत्र, तथा दो मिश्रित ग्रंथ शामिल है।

दूसरे जैन सम्मेलन में सभी आगम साहित्य को लिपिबद्ध किया गया इसमें ग्यारह अंगों को लिपिबद्ध किया गया तथा बारह अंग दृष्टिवाद को नष्ट मान लिया गया।

जैन धर्म का प्रभाव

सामाजिक क्षेत्र में 1.जैन धर्म के सर्वाधिक महत्वपूर्ण देन जाति के बंधनों एवं ऊंच-नीच की भावनाओं को दूर करना था जिस कारण समाज में निम्न वर्ग के लोगों को सामान्य जीवन जीने का अवसर मिला।

धार्मिक क्षेत्र में 2.हिंदू धर्म की अनेक बुराइयां दूर हो गई लोगों को खर्चीली यज्ञों तथा कर्मकांड से छुटकारा मिला।

सांस्कृतिक विकास 3.जैन विद्वानों ने धर्म प्रचार के उद्देश्य से लोक भाषाओं में महान साहित्य की रचना की।

विभिन्न ललित कला के क्षेत्र में भी जैन धर्म का योगदान अत्यधिक महत्वपूर्ण रहा है आबू में दिलवाड़ा के जैन मंदिर, जोधपुर में रणकपुर के जैन मंदिरों तथा मध्य प्रदेश में बुंदेलखंड में, खजुराहो में, गिरनार में और आदिनाथ के जैन मंदिरों में मंदिर निर्माण तथा मूर्तिकला के प्रशंसनीय नमूने उपलब्ध होते हैं।

दक्षिण भारत में श्रवणबेलगोला, मुद्राबिद्री तथा गुरुवायांकेरी में, कलापुर में जैन मंदिर हैं।

राजनीतिक क्षेत्र में 4.जैन धर्म के हिंसा के सिद्धांत में जन सामान्य को शांतिप्रिय बना दिया तथा उनके मन में युद्ध एवं रक्तपात के लिए घृणा की भावनाएं उत्पन्न कर दी।

युद्ध में भाग न लेने के कारण भारतीय सेना दुर्बल हो गई परिणाम स्वरूप भारतीय नरेश विदेशी आक्रमणकारियों का सफलतापूर्वक सामना नहीं कर सके, इस प्रकार जैन धर्म ने भारतीय जनजीवन को अनेक रूपों में प्रभावित किया।

© JCERT not to be republished

बौद्ध धर्म

बौद्ध धर्म के संस्थापक गौतम बुद्ध महावीर स्वामी के समकालीन थे।

बौद्ध परंपराओं के अनुसार महात्मा बुद्ध का जन्म 563 ई. पू. कपिलवस्तु के निकट नेपाल की तराई में लुंबिनी ग्राम में हुआ था।

महात्मा बुद्ध के पिता शुद्धोधन शाक्य कुल के क्षत्रिय वंशीय राजा थे।

गौतम बुद्ध के जन्म के सातवें दिन ही इनकी माता महामाया का देहांत हो गया इनकी मौसी महा प्रजापति गौतमी ने इनका लालन-पालन किया।

गौतम बुद्ध के बचपन का नाम सिद्धार्थ था।

गौतम बुद्ध बचपन से ही चिंतनशील थे उनकी इन गतिविधियों को देखते हुए 16 वर्ष की आयु में ही इनका विवाह यशोधरा नामक राजकुमारी से कर दिया गया।

इनका एक पुत्र भी हुआ किंतु गौतम बुद्ध प्रसन्न नहीं हुए वरन उसे मोह बंधन का राहु माना एवं उसका नाम राहुल रखा।

गौतम बुद्ध के जीवन को प्रभावित करने वाले चार दृश्य –
- एक वृद्ध व्यक्ति
- एक रोग ग्रस्त व्यक्ति
- एक मृत व्यक्ति
- एक सन्यासी

सन्यासी को देखकर गौतम बुद्ध को लगा कि इसे बुढ़ापे,बीमारी और मृत्यु का कोई डर नहीं है अतः उसने सन्यासी बनने का निश्चय कर लिया।

29 वर्ष की आयु में गौतम बुद्ध ने अपनी पत्नी यशोधरा एवं पुत्र राहुल को सोता छोड़कर घर त्याग दिया। बौद्ध मतावलंबी गौतम बुद्ध के गृह त्याग की घटना को "महाभिनिष्क्रमण" अर्थात महान त्याग कहते हैं।

गृह त्याग के बाद ज्ञान की खोज में गौतम बुध अलार, कलाम एवं रुद्रक रामपुत्र जैसे आचार्यों के पास गए परंतु उन्हें संतोष नहीं मिला।

अंत में कठोर तपस्या के पश्चात गौतम बुद्ध को बोधगया के पास निरंजना नदी के किनारे पीपल वृक्ष के नीचे सर्वोच्च ज्ञान की प्राप्ति हुई।

ज्ञान प्राप्ति के बाद उन्हें बुद्ध (ज्ञानी पुरुष) तथा तथागत (वह जो सत्य को प्राप्त करे) कहा जाने लगा।

ज्ञान प्राप्ति से संबंधित होने के कारण गया का क्षेत्र बोधगया और पीपल का वृक्ष जिसके नीचे गौतम बुद्ध को ज्ञान की प्राप्ति हुई थी बोधि वृक्ष के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

ज्ञान प्राप्ति के बाद महात्मा बुद्ध ने सारनाथ में अपना पहला उपदेश दिया जिसे "धर्म चक्रप्रवर्तन" के नाम से जाना जाता है।

अश्वजीत, उपालि, मौद्गल्यायन महाकाश्यप और आनंद यह बुद्ध के पहले 5 शिष्य थे।

483 ई. पू. 80 वर्ष की आयु में गौतम बुद्ध की मृत्यु कुशीनगर अथवा कुशीनारा में हुई। बौद्ध धर्म में इस घटना को "महापरिनिर्वाण" कहा गया है।

© JCERT not to be republished

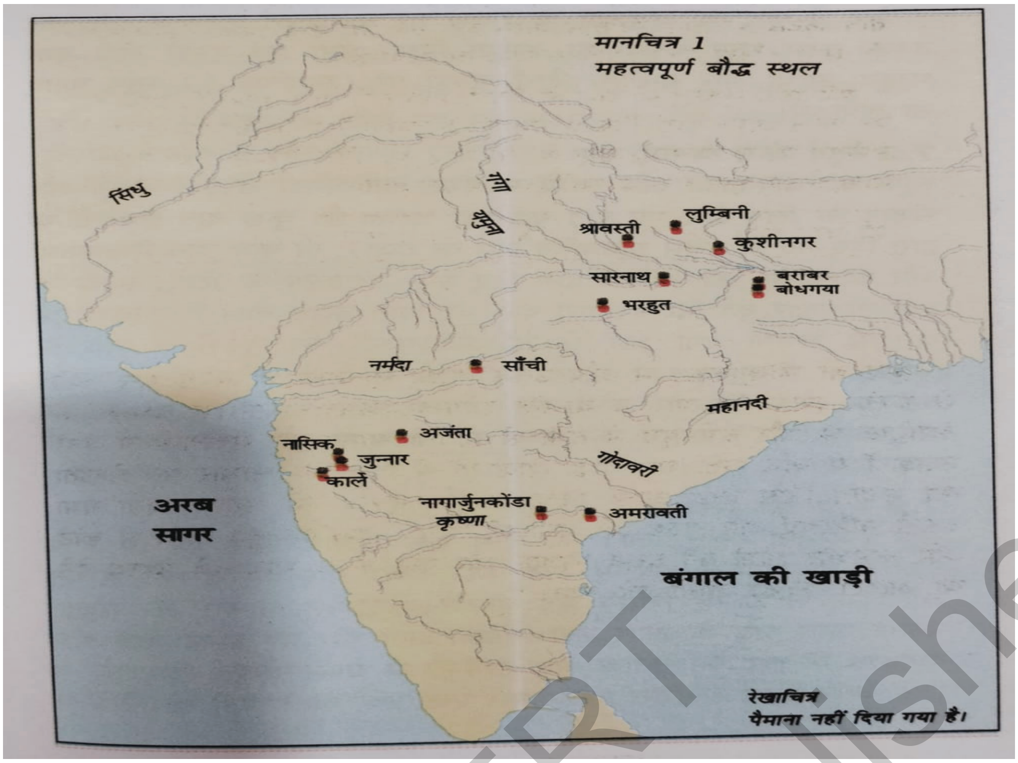

बौद्ध धर्म के सिद्धांत एवं शिक्षाएं

चार आर्य सत्य

दुख गौतम बुद्ध के अनुसार समस्त संसार दुख से भरा है यहां जन्म, मरण, वृद्धावस्था, व्याधि, अप्रिय का मिलन, प्रिय का वियोग एवं इच्छित वस्तु का प्राप्त ना होना आदि सभी दुख हैं।

दुख समुदाय समुदाय का अर्थ है कारण। गौतम बुद्ध के अनुसार संसार में व्याप्त दुखों का कोई न कोई कारण अवश्य है उन्होंने समस्त दुखों का कारण लालसा बताया है।

दुख निरोध निरोध का अर्थ है दूर करना। गौतम बुद्ध ने दुख निरोध या दुख निवारण के लिए इच्छा का उन्मूलन आवश्यक बताया है।

दुख निरोध मार्ग गौतम बुद्ध के अनुसार संसार में प्रिय लगने वाले वस्तु को परित्याग कर ही दुख निरोध मार्ग पर चला जा सकता है दुख का विनाश करने के लिए गौतम बुद्ध ने जिस सिद्धांत का प्रतिपादन किया उसे दुख निरोध गामिनी प्रतिपदा कहा जाता है

© JCERT not to be republished

अष्टांगिक मार्ग का पालन करने से दुख का निवारण संभव है -

अष्टांगिक मार्ग

- **सम्यक् दृष्टि**- चार आर्य सत्य की सही परख।
- **सम्यक् वाणी** - धर्म सम्मत एवं मृदु वाणी का प्रयोग।
- **सम्यक् संकल्प** - भौतिक वस्तु एवं दुर्भावना का त्याग।
- **सम्यक् कर्म** - सत्कर्म करना।
- **सम्य्क् अजीव** - सदाचारी जीवन जीते हुए ईमानदारी से आजीविका कमाना।
- **सम्यक् स्मृति** - अपने कर्मों के प्रति विवेक तथा सावधानी को सदैव स्मरण रखना अर्थात मन, वचन, कर्म की प्रतिक्रिया के प्रति सचेत रहना।
- **सम्यक् व्यायाम** - विवेकपूर्ण शुद्ध विचार ग्रहण करना अशुद्ध विचारों को त्यागते रहना।
- **सम्यक् समाधि** - लोभ, द्वेष, आलस, बीमारी एवं अनिश्चय की स्थिति से दूर रहने के उपाय करना ही सम्यक समाधि है।

दस शील तथा आचरण

- **अहिंसा**
- **सत्य**
- **आस्तेय (चोरी न करना)**
- **अपरिग्रह (धन संग्रह ना करना)**
- **ब्रह्मचर्य**
- **नृत्य व संगीत का त्याग**
- **सुगंधित पदार्थों का त्याग**
- **समय भोजन का त्याग**
- **कोमल शय्या का त्याग**
- **कामिनी कंचन का त्याग**

© JCERT not to be republished

JEPC Reference Book for Free Distribution : 2022-23

बौद्ध संगीतियां

प्रथम बौद्ध संगीति वर्ष– 483 ई. पू

स्थान –राजगृह

शासक– आजातशत्रु

अध्यक्ष – महाकश्यप

प्रमुख कार्य – गौतम बुद्ध के शिष्य उपाली ने स्मृति के आधार पर संघ के नियमों का पाठ किया जिससे विनयपिटक के रूप में संकलित किया गया बुद्ध के एक अन्य शिष्य आनंद ने सिद्धांत तथा आचरण के विषयों पर बुद्ध के उपदेशों को सुनाया जिसे सूत पिटक के नाम से जाना जाता है।

द्वितीय बौद्ध संगीति वर्ष – 383 ई.पू.

स्थान – वैशाली

शासक – कालाशोक

अध्यक्ष – सब्बकामिर

प्रमुख कार्य – पूर्वी भिक्षु एवं पश्चिमी भिक्षु के बीच मतभेद होने के कारण भिक्षु संघ दो संप्रदायों में विभाजित हो गया –

1महासंघिक (पूर्वी गुट) जिन भिक्षुओं ने परिवर्तन के साथ विनय पिटक के नियमों को स्वीकार किया वह महासांघिक (परिवर्तनवादी) कहलाए इनका नेतृत्व महा कश्यप ने किया।

2. थेरवादी (पश्चिमी गुट) जिन भिक्षुओं ने बिना किसी परिवर्तन के विनय पिटक के मूल नियमों को स्वीकार किया वे थेरवादी कहलाए।

तृतीय बौद्ध संगीति वर्ष – 250 ई.पू.

स्थान – पाटलिपुत्र

शासक – अशोक

अध्यक्ष – मोगलीपुत्त तिस्स

प्रमुख कार्य – अभिधम्म पिटक का संकलन किया गया

© JCERT not to be republished

चतुर्थ बौद्ध संगीति वर्ष- प्रथम शताब्दी ई.

स्थान – कुंडलवन

शासक – कनिष्क

अध्यक्ष –वसुमित्र **उपाध्यक्ष** – अश्वघोष

प्रमुख कार्य – त्रिपिटक पर प्रमाणिक भाष्य विभाषा शास्त्र की रचना इसी संगीती में हुई इसी संगीति के पश्चात् बौद्ध अनुयाई हीनयान तथा महायान दो संप्रदायों में विभाजित हो गए।

हीनयान और महायान संप्रदाय में अंतर

हीनयान मत बौद्ध धर्म का प्राचीन तथा परिवर्तित रूप था महायान उसका नवीन एवं संशोधित रूप था।

हीनयान मत में निर्माण के लिए व्यक्तिगत प्रयास को विशेष महत्व दिया गया था महायान में निर्वाण प्राप्ति के लिए मुक्तिदाता का होना आवश्यक था।

हीनयान संप्रदाय महात्मा बुद्ध को एक पवित्र आत्मा समझता था महायान संप्रदाय उन्हें ईश्वर का एक रूप मानता था।

हीनयान संप्रदाय मूर्ति पूजा के विरोधी थे किंतु महायान संप्रदाय के लोग बुद्ध तथा बोधिसत्व की मूर्तियों की पूजा करते थे।

हीनयान संप्रदाय का सर्वोच्च लक्ष्य निर्वाण प्राप्ति था किंतु महायान का लक्ष्य स्वर्ग प्राप्ति **था।**

बौद्ध साहित्य

प्राचीनतम बौद्ध ग्रंथ पाली भाषा में लिखे गए हैं जो मगध अर्थात् दक्षिण बिहार में बोली जाती थी

वैशाली की सभा में बुद्ध की शिक्षाओं का संकलन किया गया इन संग्रह को त्रिपिटक (तीन टोकरियां) कहा जाता है त्रिपिटक में शामिल हैं- विनय पिटक, सूतपितटक तथा अभिधम पिटक।

विनय पिटक में – बौद्ध मठों में रहने वाले लोगों के लिए नियमों का संग्रह है।

सूतपिटक में –महात्मा बुद्ध की शिक्षाएं संकलित हैं।

अभिधम्म पिटक में – महात्मा बुद्ध के दर्शन से जुड़े विषयों का संकलन किया गया है।

जातकों में बुद्ध के पूर्व जन्मों का वर्णन किया गया है जातक कथाएं बुद्ध कालीन राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक घटनाओं की भी जानकारी देती हैं।

© JCERT not to be republished

बौद्ध धर्म का प्रसार

महात्मा बुद्ध ने अपने अधिकांश उपदेश श्रावस्ती में दिए।

अपने जीवन के 45 वर्षों तक वे सारनाथ, मथुरा राजगीर, गया, पाटलिपुत्र, कपिलवस्तु आदि में वे अपने धर्म का प्रचार करते रहे।

बौद्ध धर्म के तीन प्रमुख अंग थे- बुद्ध, संघ और धम्म इन्हें त्रिरत्न कहा गया है।

बौद्ध धर्म का प्रभाव

कला के क्षेत्र में – मूर्ति कला एवं शिल्प कला का उद्भव बौद्ध धर्म के द्वारा ही संभव हुआ चैत्य, स्तूप और गुफा कलाओं का विकास बौद्ध धर्म की ही देन है अजंता एलोरा की चित्रकारी, कार्ले की गुफा मंदिर, सांची, अमरावती और भरहुत का स्तूप, बौद्ध कला के उत्कृष्ट नमूने हैं।

साहित्य के क्षेत्र में – भारतीय साहित्य के कोष में अपार वृद्धि की। बौद्धों ने ना केवल पाली में बल्कि संस्कृत में भी अनेक ग्रंथों का सृजन किया इनमें बुद्धचरित, मंजूश्रीमूलकल्प,ललित विस्तार मिलिंदपन्हो आदि प्रमुख है।

दर्शन के क्षेत्र में – अनेक दार्शनिक बौद्ध विचारधाराओं ने भारतीयों को ही नहीं भारतीय दर्शन को भी प्रभावित किया। असंग, वसुमित्र, धर्मकीर्ति आदि बौद्ध दार्शनिकों के अध्ययन के बिना कोई भी व्यक्ति दर्शन आचार्य नहीं बन सकता।

बौद्ध धर्म के पतन के कारण

बौद्ध धर्म का परिवर्तित स्वरूप – बौद्धों ने कुछ हिंदू देवी देवताओं को भी अपने धर्म में स्थान देना प्रारंभ कर दिया वज्रयान संप्रदाय ने टोने-टोटके को बढ़ावा दिया।

संघ में भ्रष्टाचार – बौद्ध विहार भ्रष्टाचार के केंद्र बन गए बौद्ध लोग भोग विलास में लिप्त हो गए मठों में धन संग्रह होने लगा।

विभाजन – गौतम बुध के बाद बौद्ध धर्म में विभाजन होते गए जैसे महासांघिक, थेरवाद, हीनयान महायान, वज्रयान आदि।

राजकीय संरक्षण का अंत – भारत में पाल वंश के अंत के साथ ही बौद्ध धर्म से राजकीय संरक्षण समाप्त हो गया बौद्ध के अहिंसा वादी सिद्धांत के कारण राजपूत राजाओं ने हिंदू धर्म को संरक्षण दिया।

विदेशी आक्रमण– बौद्ध विहार में किया गया संपत्ति का संग्रह ही इनके पतन का कारण बना, मुसलमानों का आक्रमण भी इनके पतन का कारण बना।

स्तूप

स्तूप का संस्कृत अर्थ टीला, ढेर या थूहा होता है।

महात्मा बुध के परिनिर्वाण के बाद उनकी अस्थियों को आठ भागों में बांटा गया तथा उन पर समाधियों का निर्माण किया गया सामान्यता इन्हीं को स्तूप कहते हैं।

© JCERT not to be republished

स्तूप के प्रकार

शारीरिक -इनमें बुद्ध या उनके शिष्यों की अस्थिर अथवा शरीर के विभिन्न अंग दांत, नाखून या केश रखे जाते थे।

परिभौतिक -इनमें बुद्ध द्वारा उपयोग में लाई वस्तुओं भिक्षा पात्र, चरण पादुका एवं आसन आदि रखे गए।

उद्देशिक -यह भगवान बुद्ध से संबंधित स्थानों (जन्म, निर्वाण, यात्रा स्थल) पर उनकी स्मृति स्वरूप निर्मित किए गए।

संकल्पित - ये बौद्ध तीर्थ स्थलों पर श्रद्धालुओं द्वारा निर्मित किए गए इनका आकार छोटा होता है।

स्तूप की संरचना

स्तूप का प्रारंभिक स्वरूप अर्ध गोलाकार होता था जिसे अंड कहा जाता था।

अंड के ऊपर एक और संरचना होती थी जिससे हार्मिका कहा जाता था।

हार्मिका के ऊपर एक सीधा खंभा होता था जिसे यष्टि कहा जाता था।

पवित्र स्थल को सांसारिक स्थान से अलग करने के लिए इसके चारों ओर एक वेदिका बना दी जाती थी।

सांची का स्तूप

सांची मध्य प्रदेश के रायसेन जिला में स्थित है

1854 ई. में अलेक्जेंडर कनिंघम ने "भिलसा टॉप्स" लिखी जो सांची पर लिखे गए प्रारंभिक पुस्तकों में से एक है।

1923 ई. में जॉन मार्शल एवं अल्फ्रेड फूसे ने "द मॉन्यूमेंट्स ऑफ सांची" पुस्तक लिखी।

सांची के स्तूप को सुरक्षित बचाने का प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष श्रेय विख्यात पुरातत्ववेता एच.एच. कॉल की महत्वपूर्ण सोच एवं भोपाल की बेगम शाहजहां बेगम एवं उनके उत्तराधिकारी सुल्तान जहां बेगम को जाता है।

1818 ई. में जनरल टेलर ने सांची के स्तूप की खोज की।

© JCERT not to be republished

JEPC Reference Book for Free Distribution : 2022-23

अमरावती स्तूप

आधुनिक महाराष्ट्र राज्य में स्थित अमरावती के स्तूप के अवशेषों का पता 76 ई. में एक स्थानीय राजा द्वारा की गई

1854 ई. में गुंटुर आंध्र प्रदेश के कमिश्नर वार्ड इलियट अमरावती की यात्रा पर गए वे अमरावती से अनेक मूर्तियां तथा उत्कीर्ण पत्थर अपने साथ मद्रास ले गए

कुछ उत्कीर्ण पत्थर कोलकाता में एशियाटिक सोसाइटी ऑफ़ बंगाल में पहुंचाए गए तो कुछ को मद्रास में इंडिया ऑफिस में रख दिया गया

अमरावती की अनेक मूर्तियां लंदन में अंग्रेज अधिकारियों के बागों की शोभा बन गए

इस प्रकार अमरावती स्तूप नष्ट हो गया और भारतीय अपनी महत्वपूर्ण विरासत से वंचित हो गए

© JCERT not to be republished

प्रश्नावली

1. क्या उपनिषद के विचारकों के विचार नियति वादियों और भौतिक वादियों से भिन्न थे ? अपने उत्तरों के लिए कारण दीजिए?

उत्तर हां, उपनिषदों के दार्शनिकों के विचार नियतिवाद इन तथा भौतिक वादियों से भिन्न थे इनकी विनता का मुख्य आधार बिंदु निम्नलिखित हैं

नियतिवादी मानते थे कि मनुष्य के सुख-दुख निर्धारित मात्रा में दिए गए हैं इन्हें संसार में बदला नहीं जा सकताऔर ना ही इन्हें घटाया-बढ़ाया जा सकता है।बुद्धिमान लोग सोचते हैं कि वह सद्गुणों तथा तपस्या द्वारा अपने कर्मों से मुक्ति प्राप्त कर लेंगे परंतु यह संभव नहीं है मनुष्य को अपने सुख दुख भोगने ही होते हैं। इसी प्रकार भौतिकवादी मानते हैं कि संसार में दान,यज्ञ या चढ़ावा जैसी कोई चीज नहीं है दान देने का सिद्धांत झूठा और खोखला है। मृत्यु के बाद कुछ नहीं बचता मूर्ख हो या विद्वान दोनों ही नष्ट हो जाते हैं। मनुष्य जिन चार तत्वों से बना है वे संसार के उन्हीं तत्वों में विलीन हो जाते हैं। उपनिषदों के अनुसार मानव जीवन का लक्ष्य आत्मा को परमात्मा में विलीन कर स्वयं ब्रह्म हो जाना है।

2. जैन धर्म के महत्वपूर्ण शिक्षाओं को संक्षेप में लिखिए?

उत्तर जैन धर्म के महत्वपूर्ण शिक्षाएं निम्नलिखित है

1. जैन दर्शन के सबसे महत्वपूर्ण अवधारणा यह है कि सारा संसार सजीव है, यह माना जाता है कि पत्थर चट्टान और जल में भी जीवन होता है।

2. जीवन के प्रति आहिंसा विशेषकर मनुष्य में, जानवरों, पौधे और कीड़े मकोड़ों को मारना जैन दर्शन का केंद्र बिंदु है। जैन मत के अहिंसा के सिद्धांत ने संपूर्ण भारतीय चिंतन को प्रभावित किया है।

3. जैन धर्म के अनुसार जन्म और पुनर्जन्म का चक्र कर्म के द्वारा निर्धारित होता है इस चक्र से मुक्ति पाने के लिए त्याग और तपस्या की जरूरत होती है यह संसार के त्याग से ही संभव हो पाता है।

जैन धर्म के पांच महाव्रत इस प्रकार हैं-

1. सत्य या अमृसा- हमेशा सत्य बोलना चाहिए।

2. अहिंसा- कभी हिंसा नहीं करना चाहिए।

3. अस्तेय- कभी चोरी नहीं करना चाहिए।

4. अपरिग्रह- संपत्ति का संग्रह नहीं करना।

5. ब्रह्मचर्य- इंद्रियों को वश में रखना।

3. सांची के स्तूप के संरक्षण में भोपाल की बेगमों की भूमिका की चर्चा कीजिए।

उत्तर- भोपाल की बेगमों ने सांची के स्तूप के संरक्षण में बहुत बड़ा योगदान दिया उनके द्वारा दिए गए प्रमुख योगदान निम्नलिखित है

1. पहले फ्रांसीसी ने और बाद में अंग्रेजों ने सांची के पूर्वी तोरण द्वार को अपने-अपने देश में ले जाने की कोशिश की, परंतु भोपाल की बेगम ने उन्हें स्तूप की प्लास्टर ऑफ पेरिस प्रतिकृतियों से संतुष्ट कर दिया।

2. शाहजहां बेगम और उनके उत्तराधिकारी सुल्तान जहां बेगम ने इस प्राचीन स्थल के रखरखाव के लिए धन का अनुदान दिया।

3. सुल्तान जहां बेगम ने वहां एक संग्रहालय तथा अतिथिशाला बनाने के लिए अनुदान दिया।

4. जॉन मार्शल ने सांची पर लिखे अपने महत्वपूर्ण ग्रंथ सुल्तान जहां को समर्पित किए। इन के प्रकाशन पर बेगमों ने धन लगाया।

5. बेगमों द्वारा समय पर लिए गए विवेकपूर्ण निर्णय ने सांची के स्तूप को उजड़ने से बचा लिया। यदि ऐसा ना होता तो इसकी दशा भी अमरावती के स्तूप जैसी होती।

6. सांची का स्तूप बौद्ध धर्म का सबसे अधिक महत्वपूर्ण केंद्र है। इसने आरंभिक बौद्ध धर्म को समझने में बहुत अधिक सहायता दी है।

4. निम्नलिखित संक्षिप्त अभिलेख को पढ़िए और जवाब दीजिए।

महाराजा हुविस्क (एक कुषाण शासक) के तैतीसवें साल में गर्म मौसम के पहले महीने के आठवें दिन त्रिपिटक जानने वाले भिक्षु बल की शिष्य त्रिपिटक जानने वाली बुद्धिमत्ता के बहन की बेटी भिक्षुणी धनवती ने अपने माता-पिता के साथ मधुवन में बोधिसत्व की मूर्ति स्थापित की।

(क) धनवती ने अपने अभिलेख की तारीख कैसे निश्चित की?

(ख)आपके अनुसार उन्होंने बोधिसत्व की मूर्ति क्यों स्थापित की?

(ग) वे अपने किन रिश्तेदारों का नाम लेती है?

(घ) वे कौन से बौद्ध ग्रंथों को जानती थी?

© JCERT not to be republished

JEPC Reference Book for Free Distribution : 2022-23

(ड.) उन्होंने यह पाठ किस से सीखे थे?

उत्तर- (क) धनवती ने अपने अभिलेख की तारीख को शाम शासक महाराजा विश्क के शासनकाल की सहायता से निश्चित कि यह तारीख हुई के शासनकाल के तैतीसवें साल की गर्मियों के पहले महीने का आठवां दिन है।

(ख) धनवती एक भिक्षुणी थी उनकी बोधिसत्व में अगाध श्रद्धा थी इसी कारण उन्होंने बोधिसत्व की मूर्ति स्थापित करवाई।

(ग) वे अपनी मौसी बुद्धिमत्ता तथा अपने माता-पिता का नाम लेती हैं।

(घ) वे त्रिपिटक नामक बौद्ध ग्रंथों को जानती थी।

(ड.) उन्होंने यह पाठ अपने गुरु तथा भिक्षु 'बल' से सीखे थे, यह भी संभव है कि उन्होंने कुछ पाठ अपनी मौसी बुद्धिमता से सीखे हो जो त्रिपिटक ग्रंथों को जानती थीं।

5. आपके अनुसार स्त्री पुरुष संघ में क्यों जाते थे?

उत्तर- पुरुषों और महिलाओं के संग में शामिल होने के महत्वपूर्ण कारण इस प्रकार है-

1. कई सांसारिक सुखों को त्यागना चाहते थे।

2. अन्य भिक्षुओ की संगति में रहकर बौद्ध साहित्य और दर्शन का अध्ययन कर सकते थे।

3. बौद्ध धर्म के पुजारी और शिक्षक बनने के लिए कई लोगों ने संघ में प्रवेश किया

4. संघ में सभी को समान माना जाता था और पिछले सामाजिक पहचान को त्याग दिया जाता था।

5. संघों का वातावरण लोकतांत्रिक था संघ के भीतर निर्णय लेना मतदान पर आधारित था इसने बहुतों को आकर्षित किया और उन्होंने संघों के जीवन को अपनाया।

6. सांची के मूर्तिकला को समझने में बौद्ध साहित्य के ज्ञान से कहां तक सहायता मिलती है?

उत्तर- सांची स्तूप भोपाल राज्य में स्थित एक अद्भुत प्राचीन अवशेष है इस स्तूप समूह में अर्ध गोले के आकार का एक विशाल ढांचा तथा कई दूसरी इमारतें शामिल हैं।

सांची के उतरी प्रवेश द्वार पर एक दृश्य, एक ग्रामीण दृश्य को चित्रित करता है जिसमें फूस की झोपड़ियां और पेड़ हैं। इतिहासकारों ने मूर्तिकला का ध्यान पूर्वक अध्ययन करने के बाद इससे वेसंतरा जातक के एक दृश्य के रूप में पहचाना है यह एक उदार राजकुमार की कहानी है जिसने एक ब्राह्मण को सब कुछ दे दिया और अपनी पत्नी और बच्चों के साथ जंगल में रहने चला गया।

बौद्ध मूर्ति कला को समझने के लिए कला इतिहासकार बुद्ध की जीवनी से परिचित होते हैं बुद्ध की आत्मकथा के अनुसार बुद्ध को एक पेड़ के नीचे ध्यान करते हुए ज्ञान की प्राप्ति हुई थी। प्रारंभिक मूर्तियों में खाली आसन, स्तूप और चक्र जैसे प्रतीकों के माध्यम से बुद्ध की उपस्थिति को दर्शाया है, इस तरह के प्रतीकों को केवल उन लोगों की परंपराओं से समझा जा सकता है जिन्होंने कला के इन कार्यों का निर्माण किया है।

प्रारंभिक आधुनिक कला इतिहासकारों में से एक जेम्स फर्ग्यूसन साँची को वृक्ष और नाग पूजा का केंद्र मानते थे क्योंकि वह बौद्ध साहित्य से परिचित नहीं थे जिनमें से अधिकांश का अभी तक अनुवाद नहीं किया गया था इसलिए वह केवल छवियों का अध्ययन करके अपने निष्कर्ष पर पहुंचे थे।

7. वैष्णवऔर शैववाद के उदय से जुड़ी वास्तुकला और मूर्तिकला के विकास की

© JCERT not to be republished

चर्चा कीजिए।

उत्तर- वास्तुकला - जिस समय सांची जैसे स्थानों पर स्तूप अपने विकसित रूप में आ गए थे उसी समय देवी- देवताओं की मूर्तियों को रखने के लिए सबसे पहले मंदिर भी बनाए गए। आरंभिक मंदिर एक चौकोर कमरे के रूप में होते थे जिन्हें गर्भगृह कहा जाता था। इनमें एक दरवाजा होता था जिसमें से उपासक मूर्ति की पूजा करने के लिए अंदर जा सकता था धीरे-धीरे गर्भगृह के ऊपर एक ऊंचा ढांचा बनाया जाने लगा जिसे शिखर कहा जाता था, मंदिर की दीवारों पर प्राय: भित्ति चित्र उत्कीर्ण किए जाते थे। आने वाले समय में मंदिरों के स्थापत्य में कई नई बातें शामिल हो गई। अब मंदिरों के साथ विशाल सभा स्थल, ऊंची दीवारें और तोरण भी बनाए जाने लगे, जलापूर्ति की व्यवस्था भी की जाने लगी, शुरू के कुछ मंदिर पहाड़ियों को काटकर खोखला कर के कृत्रिम गुफाओं के रूप में बनाए गए थे कृत्रिम गुफाएं बनाने की परंपरा प्राचीन काल से ही चली आ रही थी सबसे प्राचीन कृत्रिम गुफाएं ई. पू. तीसरी शताब्दी में अशोक के आदेश से अजीवकों के लिए बनाई गई थी यह परंपरा अलग-अलग चरणों में विकसित होती रही। इसका सबसे विकसित रूप हमें आठवीं शताब्दी के कैलाश नाथ के मंदिर में दिखाई देता है जिसमें पूरी पहाड़ी को काटकर उसे मंदिर का रूप दे दिया गया था।

मूर्तिकला- देवताओं के कई अवतारों को मूर्तियों के रूप में दिखाया गया है। शिव को उनके प्रतीक लिंग के रूप में बनाया जाता था परंतु उन्हें कई मूर्तियों में मनुष्य के रूप में भी दर्शाया गया है। यह सभी चित्रण देवताओं से जुड़ी हुई मिश्रित अवधारणा पर आधारित थी उनके गुणों और प्रतीकों को उनके वस्त्रों, आभूषणों, और बैठने की शैली से व्यक्त किया जाता था।

8. स्तूप क्यों और कैसे बनाए जाते थे?चर्चा कीजिए।

उत्तर स्तूप का शाब्दिक अर्थ टीला है। ऐसे टीले जिनमें महात्मा बुद्ध के अवशेषों जैसी उनकी अस्थियां, दांत नाखून इत्यादि या उनके द्वारा प्रयोग हुए सामान को रखा जाता था बौद्ध स्तूप कहलाए, यह बौद्धों के लिए पवित्र स्थल थे।

यह संभव है कि इस को बनाने की परंपरा बौद्धों से पहले रही हो फिर भी यह बौद्ध धर्म से जुड़ गई इसका कारण वे पवित्र अवशेष थे जो स्तूप में रखे जाते थे। इन्हीं के कारण वे पूजनीय स्थल बन गया महात्मा बुद्ध के सबसे प्रिय शिष्य आनंद ने बार-बार आग्रह करके बुद्ध से उनके अवशेषों को संजोकर रखने की अनुमति ले ली थी।

बाद में सम्राट अशोक ने बुद्ध के अवशेषों के हिस्से करके उन पर मुख्य शहर में स्तूप बनाने का आदेश दिया। दूसरी शताब्दी ई. पू. तक सारनाथ, सांची, भरहुत बौद्ध गया इत्यादि स्थानों पर बड़े-बड़े स्तूप बनाए जा चुके थे। अशोक व कई अन्य शासकों के अतिरिक्त धनी व्यापारियों, शिल्पकारों, श्रेणियों एवं बौद्ध भिक्षु ने भी स्तूप बनाने के लिए ध्यान दिया।

स्तूपों का निर्माण- प्रारंभिक स्तूप साधारण थे, लेकिन समय बीतने के साथ-साथ इनकी संरचना जटिल होती गई इनकी शुरुआत कटोरे नुमा मिट्टी के टीले से हुई। बाद में इस टीले को अंड के नाम से पुकारा जाने लगा अंड के ऊपर छज्जे जैसे ढांचा ईश्वर निवास का प्रतीक था इसे हर्मिका कहा गया। इसी में बुद्ध अथवा अन्य बोधिसत्व के अवशेष रखे जाते थे, हर्मिका के बीच में एक लकड़ी का मस्तूल लगा होता था इस पर एक छतरी बनी होती थी। अंड के चारों ओर एक वेदिका होती थी, जो पवित्र स्थल को सामान्य दुनिया से पृथक रखने का प्रतीक था।

© JCERT not to be republished

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर कौन थे?
   - a. ऋषभदेव
   - b. महावीर स्वामी
   - c. आदिनाथ
   - d. पार्श्वनाथ

2. स्तूप किस धर्म से संबंधित है?
   - a. जैन
   - b. सीख
   - c. बौद्ध
   - d. हिंदू

3. सांची मध्य प्रदेश के किस जिले में स्थित है?
   - a. विदिशा
   - b. रायसेन
   - c. भोपाल
   - d. इनमें से कोई नहीं

4. चतुर्थ बौद्ध संगीति किस शासक के काल में हुई थी?
   - a. कनिष्क
   - b. अशोक
   - c. कालाशोक
   - d. आजातशत्रु

5. महावीर स्वामी का जन्म कहां हुआ था?
   - a. लुंबिनी
   - b. पावापुरी
   - c. कुंडलवन (वैशाली)
   - d. सारनाथ

लघु उत्तरीय प्रश्न

6. श्वेतांबर और दिगंबर में क्या अंतर है?

7. गौतम बुद्ध की जीवनी का वर्णन करें?

8. स्तूप कितने प्रकार के होते हैं व्याख्या करें?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

9. बौद्ध धर्म के सिद्धांत एवं शिक्षाओं का वर्णन करें?

10. जैन धर्म एवं बौद्ध धर्म के उदय के क्या कारण थे?

विकल्प ये प्रश्नों का उत्तर

1.a 2.c 3.b 4.a 5.c

© JCERT not to be republished